

शूकरों के चयन के मानदंड

भारती देशमुख* और रेबेका सिन्हा*



वर्तमान में उत्तम मांस की बढ़ती मांग की आपूर्ति के लिए शूकर पालन को एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जा रहा है। इस व्यवसाय में न केवल प्रारम्भिक निवेश कम है, बल्कि कम अंतराल में ही अधिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है। पारंपरिक रूप से शूकर पालन मुख्यतः सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्गों द्वारा किया जाता था। फलस्वरूप उनके पास बेहतर आनुवंशिक क्षमता वाले पशुओं की अनुपलब्धता रही है। इसके साथ ही उचित आवास, संतुलित आहार और वैज्ञानिक ढंग से शूकर पालन प्रबंधन करने के लिए उचित साधन एवं जानकारी की भी कमी रही है। इन अभावों की अवस्था में शूकर पालन से उचित लाभ न होने के कारण, प्रारम्भिक काल में यह क्षेत्र किसानों को आकर्षित कर पाने में असफल रहा। इसलिए, भारतीय शूकर उद्योग को आधुनिक बनाने और छोटे आकार के ग्रामीण शूकर फॉर्मों की उत्पादकता में सुधार करने के लिए पर्याप्त वित्तीय प्रावधानों की आवश्यकता है। इसके ही साथ अधिक मात्रा में श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले मांस का उत्पादन करने में सक्षम शूकरों के वैज्ञानिक प्रजनन के लिए उपयुक्त योजनाएं भी जरूरी हैं।

आधुनिक बाजार में बढ़ती हुई मांग के कारण शूकर पालन करने से होने वाली लाभप्रदता को देखते हुए सभी कृषक वर्गों के बीच यह उद्यम उत्तरोत्तर स्वीकार्यता अर्जित कर रहा है। ग्रामीण गरीबों के उत्थान में शूकर पालन की संभावनाओं को देखते हुए भारत सरकार ने अपनी पंचवर्षीय योजनाओं के तहत वैज्ञानिक स्तर पर शूकर पालन को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं कार्यान्वित की हैं। उच्च आनुवंशिक गुणवत्ता वाले प्रजनक नर एवं मादा शूकर उपलब्ध करवाने के लिए, पूरे देश में विभिन्न स्थानों में शूकर प्रजनन प्रक्षेत्र स्थापित किए जा रहे हैं। उच्च आनुवंशिक गुणवत्ता वाले छोटे शूकर शिशु, प्रजनक नर एवं मादा की शारीरिक एवं विभिन्न गुणों के आधार पर पहचान करना

और उत्तम पशु का चयन करना पशुपालकों की एक मुख्य समस्या रही है।

चयन

- यह अनिवार्य है कि प्रत्येक शूकर की अलग-अलग जांच की जाए। एक समय में एक शूकर पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तथा पूरी तरह से उसका मूल्यांकन (उसकी खूबियों और कमियों को देखते हुए) करें।

- सबसे पहले शूकर के टॉपलाइन (रीढ़ की हड्डी), बैक (पीठ), लाइन, हैम और बगल की जांच करें। इसके पश्चात पैरों और पैरों के सेट (जमीन के साथ स्थिति) पर ध्यान दें।
- चयन करते समय पशु को उनके महत्व के लक्षणों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हमेशा महत्वपूर्ण लक्षणों का मूल्यांकन सबसे पहले करना चाहिए।

सारणी: शूकर के महत्वपूर्ण लक्षणों की श्रेणी

(अ) विक्रय करने वाले पशुओं के लिए	(आ) प्रजनन के लिए रखे जाने वाले पशुओं के लिए (मादा प्रजनक)	(इ) प्रजनन के लिए रखे जाने वाले पशुओं के लिए (टर्मिनल लाइन)
1. मांसपेशियां	1. संरचना और सुदृढ़ता	1. संरचना और सुदृढ़ता
2. शारीरिक वृद्धि दर	2. शारीरिक वृद्धि दर	2. मांसपेशियां
3. शारीरिक क्षमता	3. मातृत्व संबंधी गुण एवं संरचना	3. शारीरिक वृद्धि दर
4. चर्बीरहित मांस की मात्रा	4. शारीरिक क्षमता	4. शारीरिक क्षमता
5. संरचना और सुदृढ़ता	5. मांसपेशियां	5. चर्बीरहित मांस की मात्रा
	6. चर्बीरहित मांस की मात्रा	6. मातृत्व संबंधी गुण एवं संरचना

*गुरू अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विश्वविद्यालय, लुधियाना-141004 (पंजाब)

विकास दर का मूल्यांकन

शूकर पालन अधिकतर मांस (पोर्क) के लिए ही उपयोग किया जाता है, इसलिए यदि शूकरों की वृद्धि दर उत्तम रहती है, तो कम उम्र में ही पशु विक्रय के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे शूकरपालक को अधिक से अधिक लाभ मिल सकेगा। विकास दर का मूल्यांकन करने के लिए यह ध्यान रहे कि सभी पशुओं का भार लगभग एक ही उम्र पर मापा जाए, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि सबसे अधिक भारी शूकर में विकास दर तेज और सबसे हल्के शूकर में विकास दर धीमी है। किसी निश्चित आयु में भारी शूकर जिसमें तेज विकास दर हो, को वांछनीय माना जाता है।

शारीरिक क्षमता

शारीरिक क्षमता का अधिक एवं उत्तम होना शरीर में श्वसन, पाचन एवं प्रजनन जैसे महत्वपूर्ण प्रणालियों की कार्यक्षमता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शारीरिक क्षमता या आयतन शरीर की चौड़ाई, गहराई एवं लंबाई के साथ-साथ इन तीनों के संतुलन से संबंधित होता है।

शरीर की चौड़ाई

चौड़ाई का मूल्यांकन करने के लिए पैरों के बीच की दूरी को जमीन की सतह से लेकर ऊपर की तरफ तक देखना चाहिए। शूकर के शरीर के आगे और पिछले दोनों हिस्से की चौड़ाई उत्तम होने से पशु के खड़े होने और चलने के समय विस्तृत जगह बनती है।

शरीर की गहराई

शरीर की गहराई भी महत्वपूर्ण है,



मातृत्व संबंधी गुण

मादा शूकरों में प्रति ब्यांत शिशुओं की संख्या अधिक होने के कारण, मादा शूकर में उत्तम मातृत्व क्षमता का होना अति महत्वपूर्ण हो जाता है। उत्तम मातृत्व होने पर सभी शिशुओं में स्वास्थ्य, वृद्धिदर आदि अच्छी होने के साथ ही नवजात शूकरों में मृत्युदर भी नियंत्रित रहती है, जिससे शूकरपालक द्वारा अधिक लाभ लिया जा सकता है। मातृत्वता के गुण जैसे-मातृत्व व्यवहार, दूध उत्पादन, थनों की संख्या, आकार एवं आकृति, थनों की स्थिति, शिशुओं की थनों तक पहुंच आदि महत्वपूर्ण हैं। थनों की संख्या छः से सात जोड़ी, थनों का आकार लगभग तीन इंच के आसपास तथा आकृति में न ज्यादा नुकीला, न अत्यधिक चौड़े होने चाहिए।

जिससे शूकर के पाचन और प्रजनन प्रणाली को पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो सके। शरीर की गहराई सामने के किनारे से पीछे के किनारे तक एक समान होनी चाहिए।

शरीर की लंबाई

शरीर की लंबाई को सामने के पैरों

के पीछे से पिछले पैरों के सामने तक मापा जाता है। यह दूरी न बहुत कम होनी चाहिए, जिससे कि शारीरिक क्षमता प्रभावित हो और

शरीर में मांसपेशियों की मात्रा का मूल्यांकन

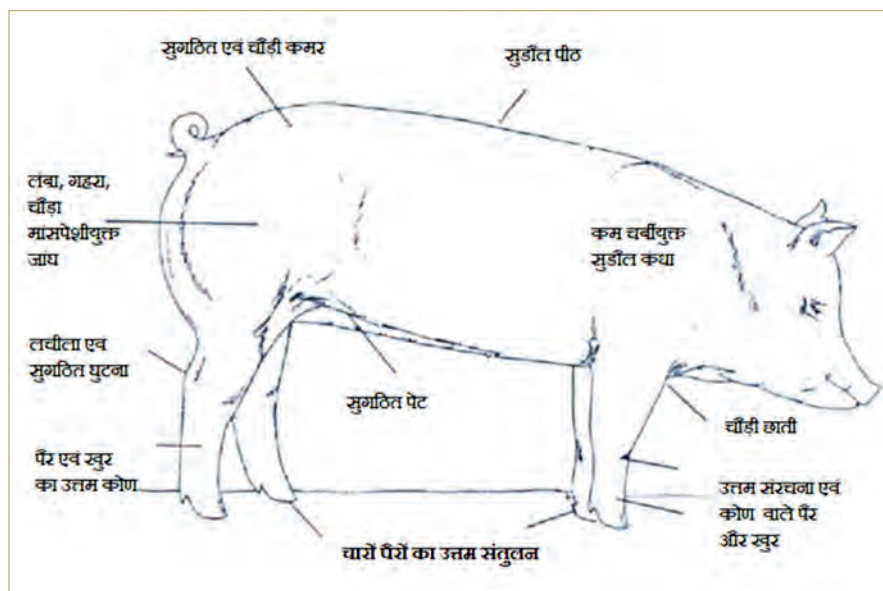
पीछे से शूकर को देखने पर मांसपेशियों की मात्रा का सबसे अच्छा संकेतक जांघ के मांस (हैम) की मोटाई है। इसके साथ ही पशुओं के चलते या खड़े रहने की स्थिति में पिछले पैरों के बीच जमीन के थोड़ा ऊपर की चौड़ाई मध्यम होनी चाहिए। पशु को ऊपर से देखे जाने की स्थिति में टॉप (लाइन) के आकार का मूल्यांकन करने के लिए यह ध्यान देना चाहिए कि टॉप लाइन में चर्बी की मात्रा न बहुत अधिक और न बहुत कम हो। एक सुडौल टॉप, तितली के आकार जैसा होना चाहिए, जोकि केंद्र की तुलना में साइड की तरफ रीढ़ की हड्डी के साथ दोनों किनारों पर फैला हुआ होता है।



शिशु शूकर

सफलता के सूत्र

वांछनीय शूकरों का चयन, इस व्यवसाय की सफलता का सबसे पहला चरण है। उचित लाभार्जन के लिए शूकरों में वांछनीय गुण मुख्यतः उसकी शारीरिक संरचना से संबंधित होते हैं। इन गुणों का यदि समुचित ध्यान प्रजनक पशुओं के चयन के समय रखा जाए, तो एक सफल शूकरपालक बनकर न केवल निवेश पर अधिकतम प्रतिफल सुनिश्चित करना संभव है, बल्कि अनेक शूकरपालकों के लिए प्रेरणा और रोजगार का स्रोत भी बना जा सकता है।



शूकरों में वांछनीय शारीरिक बनावट वाले गुण

न ही असामान्य रूप से अधिक हो, जिससे की पशु के खड़े होने या चाल का संतुलन प्रभावित हो।

शरीर में चर्बीरहित मांस की उपलब्धता

एक पशु के शरीर में दुबलेपन या मांसलता की मात्रा, उसकी उम्र, शारीरिक फ्रेम आकार, लिंग और वजन आदि से प्रभावित होती है। मांसपेशी एवं उसमें निहित चर्बी की मात्रा के मूल्यांकन के बाद ही मांसलता को देखा जाना चाहिए। जिन पशुओं में मांस की मात्रा अधिक होगी वे

सुडौल एवं भारी और जिनमें चर्बी अधिक होगी वे थुलथुले एवं अपेक्षाकृत कम भार के होंगे। शरीर में चर्बी की मात्रा का आंकलन करने के लिए सामने से पीछे की ओर देखना चाहिए अर्थात् चेहरे, जबड़े के नीचे, कंधे के पास, दोनों पैरों की जांघों में और अंत में पूंछ के सिरे की ओर चर्बीरहित मांस की स्थिति के लिए देखना चाहिए। ये सभी स्थान अधिक वसा के

जमाव के कारण न तो अधिक चिकने होने चाहिए और न ही बहुत दुबले होने चाहिए। एक जोड़ से दूसरा जोड़ साफ-साफ प्रतीत होना चाहिए।

संरचना और सुदृढ़ता का मूल्यांकन

शारीरिक संरचना और सुदृढ़ता भी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसके उत्तम ढंग से आंकलन करने के लिए पहले जमीन से शुरूआत करके ऊपर की तरफ जाना चाहिए। इन गुणों में पैरों और खुर की स्थिति एवं इससे बनने वाले कोण, दोनों पैरों के घुटनों, कमर का हिस्सा एवं इससे बनने वाला कोण और कंधों आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

पैर एवं खुर और इससे बनने वाले कोण

उत्तम ढंग से संतुलन के लिए पैर समानान्तर, पिछले पैर नीचे थोड़ा आगे की ओर मुड़े हुए एवं खुर की बनावट जमीन पर सपाट होनी चाहिए। खुर एवं पैरों के साथ बनने वाला कोण लगभग 45 डिग्री के आसपास होना चाहिए, जोकि संतुलित चाल के लिए सहायक होता है। घुटनों को पहले सीधा और थोड़ा पीछे की ओर होना चाहिए, जिससे सामने के सिरे को कुशन और मुड़ने के लिए लचक प्रदान की जा सके।

कमर एवं इससे बनने वाला कोण

कमर की संरचना लंबाई में रीढ़ की हड्डी के साथ सीधी और कूल्हे की हड्डी पर हल्का सा जमीन की ओर कोण लिए हुए थोड़ी ढलानदार होनी चाहिए। इस प्रकार की कमर एवं उसमें बनने वाले कोण को अतिरिक्त लचीलापन और अधिकतम शक्ति के लिए वांछनीय माना जाता है।

